rooh

pallavi mitra

Copyright © 2020, Pallavi Mitra
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-81-946729-3-7

Library of Congress Cataloging in Publication

अनुक्रम

फ़ुरक़त और राब्ता 1

राब्ता 2

ज़रूरी 3
फिर से इश्क़ 5
बेनाम 6
घोसला 7
फिर भी 8
वह इश्क़ 9
साथ रहना 11
रक़्स 12
मोहब्बत कर ली 13
जिस रोज़ 14
बेवजह 15
तुझसे मोहब्बत. 16
आप हमारे कौन हो 17
हिम्मत रख 18
तुम! 20
वो मोहब्बत 21
तू 22

समझ जाती हूँ मैं 23
रोक दे यह पल 24
मेरी हवा से गुफ्तगू 25
सुन..मैं क्या चाहती हूँ 26
इस कदर. 27
आजकल 28

फुरक़त 29

नफरत 30
क्यों रहता है इंतज़ार तेरा 32
आंसुओं से निखर गयी. 33
रिहा 34
कुछ पहले सा जीने की कोशिश करें? . . .35
तेरा वक़्त 36
अरसा हुआ. 37
गुरूर था 38
तेरे सवाल और मेरी चीख 39
गए दिन 41
उसे कुछ चाहिए था और मुझे कुछ 42
बारिश 43
आज फिर 44
सच्चाई से रूबरू 45
और फिर एक दिन. 46

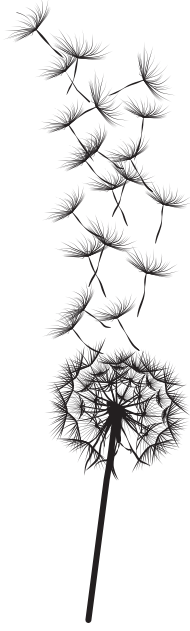

फ़ुरक़त[1] और राब्ता

तू किसी का बीता कल है
किसी और का भुलाया पल है
तू वजह भी है दो अश्को का
तू मसल्सल नहीं, किसी का सिर्फ दो पल है

पर

तू किसी की मुसकुराहट भी है
किसी के दिल की आहट भी है
तू वजह है किसी के जीने की
तू यार भी और चाहत भी है

[1]विरह, अनुपस्थिति

राब्ता[2]

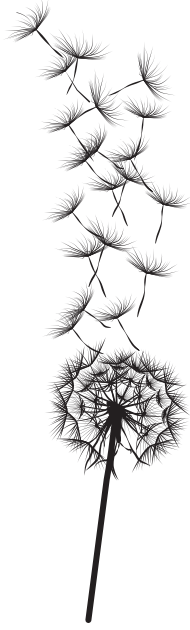

[2]वास्ता, रिश्ता

ज़रूरी

प्यार करके जताये ज़रूरी तो नहीं
याद करके कोई बताये ज़रूरी तो नहीं
रोने वाला दिल में ही रो लेता है
आँखों में आँसू आये यह ज़रूरी तो नहीं

मेरे हर शायरी में उनका होना ज़रूरी तो नहीं
मेरे हर कहानी में उनका ज़िक्र ज़रूरी तो नहीं
उनसे बातें तो चुप रह के भी हो जाती है
शब्दों से खेलना ज़रूरी तो नहीं

रिश्ते में सिर्फ हसाना ज़रूरी तो नहीं
निगाहों पे हर पल रहना ज़रूरी तो नहीं
सफर तो हाथ थामके भी कट जाता है
हमसफ़र बनना ज़रूरी तो नहीं

वक़्त-हर-वक़्त वह साथ रहे यह ज़रूरी तो नहीं
उनके ख़्वाब दिन दोपहर रहे यह ज़रूरी तो नहीं
मिलने वाले तो उनके तन्हाईयो से भी दोस्ती कर लेते है
उनका रोज़ मिलना ज़रूरी तो नहीं

ज़रूरी है विश्वास होना मेरी खुद की दीवानगी का,
कभी न कभी उनका उसमे तबाह हो जाना ज़रूरी है,
वो मेरे न हो सके कभी,
पर हर लम्हे में मुझे उनका हो जाना ज़रूरी है

उनका मेरे क़रीब आना और
मेरा उनकी बाहों में घुल जाना ज़रूरी है,
जब जान जाएँगे वो खामोशियों में घुली सुर्ख़ियों को,
उनके आखों में मेरी तस्वीर नज़र आना ज़रूरी है

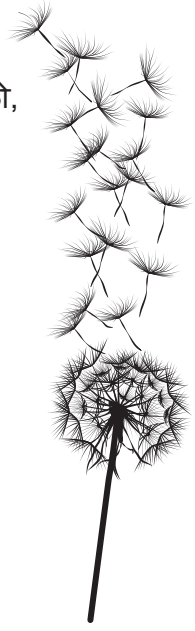

पर क्या उनके लिए ज़रूरी है मेरे बारे
में यही सब सोचना,
प्यार कभी कभी एक तरफ़ा होना भी ज़रूरी है
वो हो या न हो हमारे दीवाने इस कदर,
हमारी दीवानगी में उनका होना ज़रूरी है

फिर से इश्क़

फ़ुर्सत का सही इस्तेमाल करने लगे हैं हम
तक़दीर की नहीं, दिल की सुनने लगे हैं हम
ख्वाबो में हलके से मुस्कुराने लगे हैं हम
जाने अनजाने में फिर से इश्क़ करने लगे हैं हम

यूँही चलते हवाओं से बातें करने लगे हैं हम
बिन मौसम बारिश में फिर से भीगने लगे हैं हम
नींद से उठके उनकी तस्वीर देखने लगे है हम
जाने अनजाने में फिर से इश्क़ करने लगे हैं हम

उनका ज़िक्र आने पे शर्माने लगे हैं हम
अपनी कम, उनकी दुआ ज़्यादा करने लगे हैं हम
उनसे अपनी लकीरे मिलाने लगे हैं हम
जाने अनजाने में फिर से इश्क़ करने लगे हैं हम

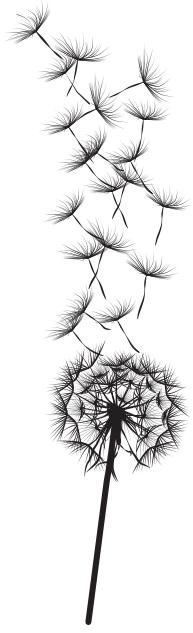

बेनाम

यह रिश्ता बेनाम रहे तो अच्छा है
तेरे मेरे अल्फाज़ो[3] में मेहफ़ूज़ रहे तो अच्छा है
आँखों आँखों में ही बयान रहे तो अच्छा है
दिल की धड़कनो में इश्क़ का पैगाम[4]
रहे तो अच्छा है

तेरे गलियों में मेरा साया गुमनाम रहे तो अच्छा है
हमारे ज़िंदगी में हमारे बस कुछ शाम
रहे तो अच्छा है
कहते है मंज़िल मिलते ही रास्ते ख़त्म हो जाते है
तो इस सफर में हम नाकाम रहे तो अच्छा है

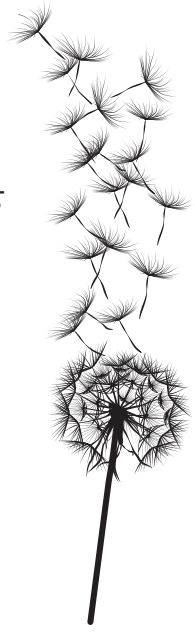

[3]सुरक्षित
[4]खबर

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com